(1)

5/8/20

बी.ए. + बी.एड.
Part I
Hindi रचना
सूरदास के पद
की व्याख्या —

डॉ० अमनदीप कौर
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
[illegible] कॉ०,
[illegible]

प्रश्न- सूर के पद की व्याख्या —

निसि दिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहति पावस ऋतु हम पर, जब ते स्याम सिधारे।
दृग अंजन न रहत निसि बासर, कर कपोल भए कारे।
कंचुकि-पट सूखत नहिं कबहूँ, उर बिच बहत पनारे।
आँसू सलिल सबै भई काया, पल न जात रिस टारे।
सूरदास प्रभु यहै परेखो, गोकुल काहे बिसारे।।

उत्तर- व्याख्या — प्रस्तुत पद सूरदास द्वारा रचित है। यह पद सूरदास के सूरसागर से लिया गया है। सूर के सूरसागर से प्रस्तुत पद हमारी पाठ्य पुस्तक कविता-कानन में संकलित किया गया है।

प्रसंग — प्रस्तुत पद का प्रसंग यह है कि कंस को मारने कृष्ण गोकुल से मथुरा चले जाते हैं। लम्बे अन्तराल तक जब कृष्ण गोकुल नहीं लौटते हैं तो यहाँ गोपियाँ कृष्ण के वियोग में व्यथित होती हैं।

मूल भाव —— प्रस्तुत पद में गोपियों की विरह दशा का मार्मिक वर्णन किया गया है। कृष्ण के वियोग में गोपियाँ काफी व्यथित हैं।

साधारण अर्थ — प्रस्तुत पंक्तियों में कृष्ण के वियोग में गोपियों की विरह दशा का वर्णन करते हुए बड़े ही मार्मिक ढंग से किया गया है। कृष्ण जब

कहती हैं —

B.A + B.Sc.
हिन्दी रचना (2) 5/8/20 — क्रमशः —
Part I — सूर के पद की व्याख्या

छोड़कर मथुरा चले जाते हैं। उनसे बिछुड़कर गोपियाँ रात दिन रोती रहती हैं। वह कहती हैं कि कृष्ण के अभाव में मेरे नेत्र लगातार रात-दिन बरस रहे हैं अर्थात् गोपियाँ लगातार रोती रहती हैं। कृष्ण के अभाव में गोपियों के जीवन में वस्तुतः वर्षा ऋतु का आगमन हो गया है।

गोपियों के आँखों का अंजन आँखों में ठहर नहीं रहा है। जब-जब गोपियाँ आँखों में काजल लगाती है तब-तब उनके काजल आँसुओं में घुलकर नीचे गिर जाता है। जिसके फलस्वरूप गाल और हाथ अंजन के रंग से रंग कर काला हो जाता है।

आँसुओं के कारण उनके अतः स्तन हमेशा भीगे रहते हैं तथा लगातार नेत्रों के बरसने के कारण उनके हृदय के बीच में आँसुओं की धारा प्रवाहित हो रही है। गोपियों की पूरी काया आँसुओं से भीग गई है। कृष्ण के वियोग में गोपियों को कृष्ण से एक पल के लिए भी अलग रहना मुश्किल है।

सूरदास कहते हैं कि गोपियाँ कहती है कि हे कृष्ण यह परीक्षा का समय है, यह संकटपूर्ण समय है। इस संकटपूर्ण समय में हे कृष्ण तुमने गोकुल को कहीं बिसरा दिया है। तुमने गोकुल को क्यों बिसरा दिया यह बात समझ में नहीं आती है। अतः गोपियाँ कहती है कि हे कृष्ण तुम मथुरा से गोकुल शीघ्र आकर मेरी विरह-व्यथा को दूर करो।

क्रमशः —